IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

साहित्य और नारी वेदना

रागिनी सिंह[1], डॉ. भूपेन्द्र सिंह[2]
शोधार्थी (हिन्दी), शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)
प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

शोध–सारांशः

साहित्य में नारी का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नारी का जीवन बहुत ही संघर्षों एवं वेदनाओं के साथ गुजरता रहा, सबसे पहले नारी के लिए आंतरिक जीवन होता है, जहाँ वह जीती हैं, सांस लेती हैं और वहीं दूसरी ओर समय की चुनौतियाँ जिसका वह डट कर मुकाबला करती हैं। नारी के जीवन में सृजन के बीज अनवरत की स्थित बनी रहती है। उनकी राह आसान नहीं होती है। उक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए शोध–पत्र तैयार करने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्दः साहित्य, नारी, वेदना, चुनौतियाँ, अस्तित्व, भयानक, स्वालम्बन, पुराणों आदि।

प्रस्तावनाः

पुराणों में नारी के विषय में कहा गया है कि प्रकृति शक्ति है और पुरुष शक्तिमान है। शक्ति के बिना शक्तिमान का अस्तित्व नहीं है। स्त्री–पुरुष जीवन रथ के दो पहिए हैं, इन्हीं दोनों के सहारे जीवन अपने विभिन्न पक्षों के साथ निरंतर आगे बढ़ता रहता है।

नारी जीवनदायिनी है, उनके बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती, साहित्य की ऐसी कोई भी विद्या नहीं है, जिसमें नारी का चित्रण न किया गया हो, परंतु यह दुर्भाग्य की बात है कि आज भी भारतीय नारी अपने अस्तित्व को लेकर संघर्षरत है। इसे भारतीय समाज की विडम्बना ही कहा जायेगा। पुरुष ने नारी को या तो देवी का स्थान देकर मंदिरों में उसकी पूजा की या उसे सिर्फ ताड़ना का अधिकार बनाया है।

पुरुष ने कभी भी नारी को अपने बराबर का दर्जा नहीं दिया, धर्म ग्रन्थों में भी नारी के साथ न्याय नहीं किया है। जहाँ अर्थ की दृष्टि से पुरुष को संपत्ति का अधिकार दिया गया है, वही नैतिकता की मर्यादा पालन का भार स्त्री (नारी) पर डाल दिया गया है। वह गृहस्वामिनी होकर पुरुष की दासी या वंदिनी जैसी थी। पति के अतिरिक्त अन्य पुरुष से प्रेम करने वाली नारी सबसे भयानक नरक में दुःख भोगने की व्यवस्था थी। परंतु यही बात कई पत्नियाँ तथा दासियाँ रखने वाले पुरुष के लिए नहीं थी। रामायण एवं महाभारत जैसी महाकाव्यों में वर्णित पंच कन्याओं पुराण कथाओं के संसार में अपनी अद्वितीय छाप छोड़ी हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

इनमें सीता द्रौपदी, मन्दोदरी, अहित्या और तारा प्रमुख है, फिर भी इन सबका जीवन वृत्तान्त किसी न किसी रूप में आज कि करोड़ों भारतीय नारियों में दिखाई देता है। इन पाँच कन्याओं ने अपने जीवन में जिन दुखों और त्रासदियों को झेला है। ठीक वैसी पीड़ा एवं संत्रास आधुनिक भारतीय महिलाएँ भी झेल रहीं हैं। समय–समय में कई साहित्यकारों ने नारी संबंधित समस्याओं और अनेक शोषण का उल्लेख अपने साहित्य में किया है। सुभद्रा कुमारी चौहान जी ने नारी की स्वतंत्रता और उनके आर्थिक स्वालम्बन को महत्व दिया।

सुभद्रा कुमारी के विचारः

स्त्री का हृदय पहचानों और उसको चारों ओर फैलने और विकसित होने का अवसर दो। यह न भूल जाओ कि उसकी भी एक व्यक्तिक्त है। नारी विद्याता कि ऐसी सुंदर रचना है, जिसके आगमन से शुष्क जीवन में भी रसधान बहने लगती है। नारी मात्र ईश्वर की अद्वितीय रचना ही नहीं इस सृष्टि की भी रचयिता है। विधाता ने नारी की रचना की है, तो नारी सृष्टि की रचना करती है।

अकेले पुरुष के द्वारा जगत की कल्पना नहीं की जा सकती वैदिक काल में भी नारी का स्थान सशक्त व्यक्तिगत की स्वामिनी के रूप में दृष्टिगोचर होता है। फिर कालान्तर में नारी के जीवन में जितने उतार–चढ़ाव आये उतने किसी में नहीं आये। फिर भी सृष्टि के रचना में नारी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

मेरा मानना है कि

जिस प्रकार नारी के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती उसी प्रकार नारी के बिना साहित्य भी अकाल्पनिक है। भारतीय संस्कृति में नारी को सदा ही आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

मनुस्मृति में कहा गया है–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्त्रफलाः क्रियाः।।

अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने कहा है–

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है, दूध और आँखों में पानी।

इन पंक्तियों में गुप्त जी ने यशोधरा के विरह का वर्णन किया है, कवि कहते हैं कि–

गौतम बुद्ध के घर छोड़कर जाने के बाद यशोधरा जो विरह वर्णन नहीं है, वह नारी मन की व्यथा को व्यक्त करता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

सखि वे मुझसे कहकर तो जाते,

कहते, तो क्या मुझको वो अपनी पथ–बाधा ही पाते,

मुझको बहुत उन्होंने माना,

फिर भी क्या पूरा पहचाना,

मैंने मुख्य उसी को जाना जो वे मन में लाते

सखि वे मुझसे कहकर जाते,

हिन्दी साहित्य का इतिहास महिला साहित्यकारों योगदान से भरा हुआ है, वीरगाथा काल में जहाँ नारी की उपस्थित नगण्य है, वहीं भक्तिकाल में मीराबाई, सहजोबाई का भी उल्लेख है और समीक्षा की गई है, पुराणों में नारी के विषय कहा गया है–

विद्या समस्यास्वत देवी भेदाः

स्त्रियों समस्ता सकला जगत्सु

त्वथैकया पूरितमम्वयेतत्

का तै स्तुति परोक्ति

देवि! सम्पूर्ण विद्याएं तुम्हारे ही भिन्न–भिन्न स्वरूप हैं, जगत् में जितनी भी स्त्रियाँ हैं, वे सब तुम्हारी ही मूर्तियाँ हैं। एक मात्र तुमने ही इस विश्व को व्याप्त कर रखा है। तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है, तुम तो स्तवन करने योग्य पदार्थों परे परावाणी हो, इस तरह से नारियों की उपमा दी गई है। इसी तरह गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं–

कत विधि सृजी नारी जग माही,

पराधीन सपनेहु सुख नाही।

अर्थात्– नारी सदा से पराधीन रही है तथा पराधीन को सपने में भी सुख प्राप्त नहीं हो, सकता, नारी कभी भी स्वतंत्र नहीं रही है। न बाल्यकाल में न यौवन में न वृद्धावस्था में स्त्री को सम्मान देने और उसे अधिकार दिलाने के लिए अनेक बुद्धिजीवी पुरुष वर्ग समझ आये पर क्या परिस्थितियाँ बदली! यह चिरकालिन प्रश्न–प्रश्न ही बना रहा।

नीलेश रघुवंशी की पंक्तिः–

मिल जानी चाहिए अब मुक्ति स्त्रियों को,

आखिर कब तक विमर्श में रहेगी मुक्ति।

बननी चाहिए एक सड़क चले जिस पर सिर्फ स्त्रियाँ ही मेले और हाट–बाजार भी अलग समय की परिस्थितियों के अनुसार नारी मुक्ति की आकांक्षा और प्रयास न सिर्फ भारत बल्कि पूरे विश्व का एक साझा प्रयास रहा।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

राष्ट्र कवि सुमित्रानंदन पंत जी के शब्दों में–

मुक्त करो नारी को
मानव चिर वन्दिनी नारी को
युग–युग से निर्मम कारा से,
जननि सखि नारी को,

इसी तरह सूरदास द्वारा रचित सूरसागर के भ्रमरगीत सार में गोपियों की मुखरता और उन्मुक्त प्रेम की अभिव्यक्ति के माध्यम से नारी अस्मिता का चिन्ह दिखाई देते हैं। मीराबाई अपनी स्वतंत्रता का शंखनाद करती हैं और चुनौती देती हैं, नारी के प्रति जो सदियों से चली आ रही झूठी मान सम्मान मर्यादा की बखान न करते हुए मीरा अपने आपको बैरागी मानती है और कहती हैं–

लोक लाज कुल मान जगत की,
ददू बहाय जस पानी
अपने घर का पर्दा करके,
मै अबला बैरागी।

मीराबाई अपने साहस आत्मविश्वास की अदम्य क्षमता से मध्यकालीन धर्म और समाज को खुली चुनौती देती है। मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं कि– मीरा ने उस आतंककारी लोक और उसके भयावह धर्म के विरुद्ध खुला विद्रोह किया उनकी कविता में एक ओर सामंती समाज में स्त्री की पराधीनता और उस व्यवस्था के बंधनों का पूरी तरह निवेश और उससे स्वतंत्रता के लिए दीवानगी के हद तक संघर्ष भी है। मध्यकाल में मीरा, रामो, सहजोबाई, सामाजिक जीवन परिचय के साथ–साथ साहित्यिक जीवन में भी स्वतंत्रता परिचय देती हैं और पुरुष प्रभुत्व के लिए चुनौती बनकर सामने आती हैं। साहित्य में नारी वेदना एक अवधारणा भी है, जो नारी अस्तित्व को बनाये रखने एवं उसकी अस्मिती में अनेक प्रश्न उठाने का प्रयास करती हैं, साहित्य में नारी विमर्श की शुरूआत छायावाद से मानी जाती है। छायावाद की प्रमुख लेखिका महादेवी वर्मा जी की श्रृंखला नारी के जीवन का सुन्दर चित्रण करती हैं, आधुनिक मीरा के नाम से जानी जाती है।

महादेवी जी की पंक्ति :–

"मैं नीर भरी दुख की बदरी,
स्पदंन में चिर निस्पंद बसा
कृन्दन में आहत विश्व हसा
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरणी मचली।"

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

वेदना की अभिव्यक्ति के साथ करुणा भाव को महादेवी जी ने स्थापित किया है। नारियों में हमेशा कुप्रथाओं और रूढ़ियों से मुक्ति पाने के लिए हमेशा संघर्ष किया है और राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में अपनी भूमिका निभाई है।

आशारानी व्होरा ने लिखा है :–

हमारे यहाँ मुक्ति का अर्थ पश्चिम के अर्थ में पुरुषों की सत्ता से मुक्ति कभी नहीं रहा, राज्य और स्वतंत्रता की बात जब–जब सामने आई है, पुरुषों की अनुपस्थिति में स्वयं सिर पर जिम्मेदारी से शत्रुओं को ललकारने में महिलाएँ पीछे नहीं हटीं। इसी प्रकार नारी का अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष कभी जागरण का प्रयास रहा है तो कभी प्रगति और विद्रोह का विगुल बजाने वाला मंत्र आज हम देख रहे हैं, कि अनेक सामाजिक व राजनीतिक संघटन स्त्रियों के अनछुए पहलुओं को लेकर चर्चाएँ करने लगे हैं। जिसमें नारी पुरुष और समाज के साथ नए सम्बन्ध नये सिरे से परिभाषित होने लगे हैं। निराला जी कहते हैं कि:–

कीन्हा था तुमसे प्यार प्रिये,
कर लेना इतना याद प्रिये,
फिर कर देना वही क्षमा,
ये पल दो पल का उन्माद प्रिये।

क्षमा करना ही तो नारी ने सीखा है। हमेशा से क्योंकि क्षमादान सक्षम ही दे सकती हैं। नारी फिर नारी को समझना बहुत मुश्किल है, पुरुषों के लिए।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नारी प्राचीन काल से ही शोषित एवं पीड़ित रही है। पुरुष प्रधान समाज मान मर्यादा की आड़ में उसे दबाकर रखना चाहा। कभी घर का इज्जत कहकर तो कभी देवी कहकर, चारों दिवारों के अंदर कैद ही रखना चाहा। इन्हीं परम्परागत बेड़ियों को लांघने की लड़ाई है जिसे नारी वेदना कहते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ की सूची :

1. डॉ. सुमन सिंह, 'हिन्दी साहित्य में नारी अस्मिता के विविध रूप'
2. सूरज पाल चौहान, 'समकालीन हिन्दी दलित साहित्य'
3. शरण कुमार लिंबाले, 'दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र'
4. सुशीला टाक 'भौरे–सिकंजे का दर्द'

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

5. दयानिधि मिश्र, 'करम मिश्र, साहित्य में नारी चेतना'

6. डॉ. राजाराम गुप्ता, मनुस्मृति।

7. भद्रशील रावत, 'भारत की गुलामी में गीता की भूमिका'।

8. भिक्खु बोधानन्द, 'मूल भारतवासी और आर्य'।

9. डॉ. भीमराव अम्बेडकर, 'हिन्दू धर्म की रिडल ब्राह्मणशाही की उहापोह'।

10. रामचरित मानस, तुलसीदास, गीता प्रेस गोरबपुर।